Derailment of Janata Express

253. **Shri P. G. Deb:**
Shri Panigrahi:

Will the Minister of **Railways** be pleased to state:

(a) the causes of the derailment of the engine of the Howrah-Hyderabad Janata Express near Rupsa in Orissa on the 29th December, 1957;

(b) whether any enquiry has been made about the accident; and

(c) if so, the action taken in the matter?

The Deputy Minister of Railways (Shri Shahnawaz Khan): (a) On 29th December, 1957, at about 22.14 hours, whilst Train No. 10 DN Janata Express was on the run between Rupsa and Haldipada stations, the driver heard an unusual sound and brought the train to a stand. On examination, it was found that the right hand rear bogie wheel tyre of the engine had burst. As the engine was not able to move, the rake of the Janata Express was drawn to Rupsa station. After the rake had been pulled back, efforts were made to pull the disabled engine, but it derailed of two front wheels.

(b) and (c). An enquiry was held to investigate into the interruption to services resulting from this accident.

The metallurgical investigations have revealed that the material of the tyre was not to specification and this is being taken up with the manufacturers.

Hindustan Ship Yard

254. Shri V. P. Nayar: Will the Minister of **Transport and Communications** be pleased to lay on the Table a statement showing the names, designation and monthly emoluments of all officers employed in the Hindustan Ship Yard, drawing Rs. 500 or above on the 1st October, 1957?

The Minister of State in the Ministry of Transport and Communications (Shri Raj Bahadur): A statement giving the requisite information is placed on the Table of the Lok Sabha. [*See* Appendix II, annexure No. 10.]

इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज (प्राईवेट) लिमिटेड

२५५. **श्री म० ला० द्विवेदी :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इंडियन टेलीफोन इण्डस्ट्रीज (प्राइवेट) लिमिटेड के कर्मचारियों के निवास तथा अन्य सुख-सुविधा के लिये क्या प्रबन्ध किये गये हैं ; और

(ख) इन प्रबन्धों पर प्रतिवर्ष कितना खर्च किया जाता है ?

परिवहन तथा संचार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री राज बहादुर) : (क) कम्पनी ने एक योजना बनाई है जिसमें फैक्टरी के पास ही स्वतंत्र नगर होगा जिसमें लगभग २,५०० कर्मचारियों के रहने की व्यवस्था की जायेगी । योजना में एक अस्पताल भी होगा जिसमें ४८ रोगियों के लिये पलंगों की व्यवस्था होगी और उसमें एक्सरे, फिज़िओथेरापी, जच्चाखाना, इत्यादि सुविधायें होंगी । योजना में एक हाई स्कूल, कर्मचारियों के लिये क्लब, स्टेडियम, अतिथिगृह, होस्टल, खेलकूद के मैदान, बच्चों के पार्क और बाजार की भी व्यवस्था की गई है ।

अब तक ५४६ मकान बन चुके हैं और कर्मचारीगण उनमें रहने भी लगे हैं । मार्च, १९५८ तक ३३८ मकान और बन कर रहने के लिये तैयार हो जायेंगे । अगले वित्तीय वर्ष के लिये कम्पनी का विचार २२२ और मकान बनाने का है । अस्पताल की इमारत बन कर तैयार हो चुकी है और बाहरी मरीज, फिजिओथेरापी और प्रयोगशाला विभागों ने काम करना शुरू कर दिया है । जच्चाखाना और भरती होने वाले मरीजों के विभागों